Result Mitra Daily Magazine

युद्ध के पर्यावरणीय परिणाम

❖ हालिया संदर्भ :

- प्रत्येक वर्ष 6 नवंबर को 'युद्ध एवं सशस्त्र संघर्ष में पर्यावरण के शोषण को रोकने के लिए' अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया जाता है।
- इस दिन को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 2001 में नामित किया गया, जिसे पहली बार 2002 में मनाया गया।
- यह दिन वैश्विक नेताओं को पर्यावरणीय चिंताओं के प्रति एकजुट होकर बेहतर निदान के लिए प्रयत्न करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

❖ युद्ध और पर्यावरण :

- युद्ध और सशस्त्र संघर्ष अत्यधिक प्रदूषण उत्पन्न करते हैं, जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभाव को बढ़ाते हैं, पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचाते हैं, नए रोगाणुओं को उत्पन्न होने में भूमिका निभाते हैं तथा स्थानीय समुदायों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा करते हैं, जो पीढ़ियों तक महसूस की जाती है।
- वर्तमान परिदृश्य में गाजा क्षेत्र एवं रूस–यूक्रेन युद्ध इस ओर पर्यावरण को ले जा रहे हैं।

❖ गाजा–क्षेत्र युद्ध :

- जून में प्रकाशित UNEP के एक रिपोर्ट में गाजा के एक छोटे से क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र पर युद्ध के प्रभाव का विश्लेषण किया गया, जो पहले से ही जलवायु परिवर्तन, उच्च जनसंख्या घनत्व, तेज शहरीकरण एवं लगातार संघर्षों के कारण बेहद संवेदनशील रहा है।
- रिपोर्ट में बताया गया कि युद्ध के कारण बढ़ता जल, वायु, ध्वनि और मृदा प्रदूषण तथा स्वच्छता प्रणालियों का पतन लोगों के स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा एवं पर्यावरण को बेहद नुकसान पहुंचा रहे हैं।
- विस्फोटक मलबे एवं कई बिना फटे बम गंभीर चिंता का विषय हैं।
- 7 अक्टूबर 2023 से अब तक 41,000 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं, 95,000 से ज्यादा घायल हो चुके हैं तथा 75% आबादी विस्थापित हो चुकी है।
- युद्ध के कारण रोके जा सकने वाली मौतों में वृद्धि हुई है, बीमारियों का प्रसार बढ़ा है एवं शारीरिक–मानसिक बीमारियों की दर में वृद्धि हुई है।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अनुमान लगाया है कि फिलीस्तीन में 1,62,000 से अधिक महिलाओं को गैर संचारी रोग (मधुमेह, उच्च रक्तचाप, कैंसर) हो सकता है।

❖ रूस–यूक्रेन युद्ध :

- ढाई साल से चल रहे इस युद्ध ने विशेषकर यूक्रेन के पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र पर विनाशकारी प्रभाव डाला है।
- एक रिपोर्ट के अनुसार अप्रैल 2023 तक लगभग 1,74,000 वर्ग कि.मी. यूक्रेनी क्षेत्र (संपूर्ण क्षेत्रफल का 30%) बारूदी सुरंगों से दूषित हो चुका है, जबकि बमबारी से वायु प्रदूषण अत्यधिक बढ़ गया है।
- युद्ध के कारण जलवायु परिवर्तन के प्रति यूक्रेन की संवेदनशीलता काफी बढ़ गई है और GHG उत्सर्जन में कमी करने के प्रयासों को जटिल बना दिया है।
- चूंकि रूस एवं यूक्रेन ऊर्जा, खाद्य–अनाज एवं उर्वरकों के प्रमुख आपूर्तिकर्ता है, इसलिए युद्ध ने वैश्विक आपूर्ति–श्रृंखला पर नकारात्मक प्रभाव डाला है।
- युद्ध के कारण मानवीय बुनियादी ढांचे का गंभीर विनाश हुआ है, जिसने आंतरिक विस्थापन, स्वास्थ्य चिंताएं एवं रोजगार संकट को बढ़ा दिया है।
- इस युद्ध के कारण 622 बच्चों सहित 12,000 लोग मारे जा चुके हैं।

❖ दीर्घकालीन प्रभाव :

- इतिहास साक्षी रहा है कि किस प्रकार युद्धों ने सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर दीर्घकालीन प्रभाव डाला है।
- WW–II के दौरान हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराए गए परमाणु बम का विकिरण वर्तमान तक प्रभावी है।
- विकिरण के संपर्क में आए लोगों के वंशज आज भी कैंसर एवं आनुवांशिक क्षति का दंश झेल रहे हैं।

❖ वैश्विक कार्रवाई का समय :

- परिणाम को देखते हुए युद्धों एवं संघर्षों के पर्यावरणीय प्रभाव पर ध्यान देना समय की मांग है।
- वैसे तो वर्तमान में युद्ध के दौरान पर्यावरणीय प्रभावों को मापने के लिए कोई अंतर्राष्ट्रीय मानक नहीं है, लेकिन UNEP जैसे संस्थानों ने इसके आकलन एवं निगरानी के लिए रणनीतियां विकसित की है।
- ऐसी स्थिति में यह महत्वपूर्ण है कि वैश्विक नेता एकजुट होकर न केवल युद्धों एवं संघर्षों को रोकने के लिए प्रयासरत हों, बल्कि इसके भीषण परिणामो को शमन करने के लिए भी प्रयास करें।

Result Mitra

TM
Result Mitra